'सानंद न्यास' के बैनर तले यूसीसी ऑडिटोरियम में नाटक 'संगीत मत्स्यगंधा' का मंचन

महाभारत काल के जरिए कामनाओं में फंसे इंसान को चेताने की कोशिश

षडरिपुओं से दूर रहने की सीख

इंदौर। नईदुनिया रिपोर्टर

मराठी नाटक 'संगीत मत्स्यगंधा' की कहानी यूं तो भीष्म पितामह और महर्षि व्यास के जन्म की है। मगर वास्तव में ये षडरिपुओं (काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ और मत्सर) के भंवरजाल में फंसे हर उस इंसान की है, जो पाराशर की तरह पतन, सत्यवती जैसी नादानी, शांतनु की तरह तीव्र लालसा, भीष्म सी अग्निपरीक्षा और अंबा जैसी प्रतिशोध की भावना का शिकार है। इन सबके कारण शुरू होती है महाभारत, जिसमें मानव कभी स्वजन तो कभी अपने अंतर्मन से ही संघर्ष करता नजर आता है।

हर दौर में ऐसे न जाने कितने किरदार जन्म लेते रहे हैं और न जाने कितने जन्म लेंगे। इसलिए हर दौर में ऐसी कहानियां गढ़ी जाती रहेंगी। यही वजह है कि सबसे पहले रंगमंच पर 1 मई 1964 को मंचित ये कालजयी नाटक 53 साल बाद अब भी लोगों की पसंद की कसौटी पर खरा उतर रहा है।

दरअसल इंसानी फितरत ही कुछ ऐसी है कि वो वर्तमान की खुशियों को छोड़कर भविष्य की चिंता में घुला करता है। पैताने के नजदीक रखे नसीब को तो पैरों तले रौंदता रहता है और भविष्य के नाग को चोट पहुंचाने के लिए उसकी सर्वथा अनजान बांबी में हाथ डालता रहता है। एक लाइन में कहें तो नाटक से यही सीख मिलती है कि कल की चिंता छोड़ आज में जियो, गमों को मिटाने की कोशिश करो और खुशियों का लुत्फ उठाओ। जिंदगी परमात्मा की अनमोल सौगात है इसके हर पल, हर क्षण को खुशी से बिताओ। इस पैगाम को नाटक के जरिए दिलचस्प अंदाज में पेश किया लेखक वसंत कानेटकर और निर्देशक संपदा जोगलेकर ने।

- ज्योत्सना भोंडवे

पं. जितेंद्र अभिषेकी का अमर संगीत

'सानंद न्यास' के बैनर तले इस अनूठी प्रस्तुति का मंचन यूसीसी ऑडिटोरियम में हुआ। उम्दा गायकी के साथ कलाकारों का अभिनय पक्ष भी शानदार रहा। केतकी चैतन्य, रामदास कामत, नचिकेत लेले, पूजा रायबागी, प्रति मंगवाडे, संजीव तांडेल, अमोल कुलकर्णी और राहुल मेहंदले जैसे कलाकारों ने दर्शाया कि क्यों रंगमंच को अभिनय की सर्वश्रेष्ठ विधा माना जाता है। उम्दा संवादों के साथ इस नाटक की बड़ी खासियत था संगीत भी रहा जिसे पं. जितेंद्र अभिषेकी के अनमोल सुरों ने अमर बना दिया है। यही कारण है कि इसके नाट्यपद अब भी मराठी लोकमानस में लोकप्रिय हैं।

कवायद, युवाओं को जोड़ने की

सच तो ये है कि मराठी नाट्य संगीत, रंगमंच की प्राचीन परंपरागत विधाओं में शुमार किया जाता है। संगीत और गायकी इसकी खासियत है। लेकिन समय के प्रवाह में ये लुप्त होती जा रही है। नई पीढ़ी को संगीत नाट्य परंपरा के प्रति आकर्षित करने और जोड़ने के मकसद से इसे पुनर्जीवित करने का बीड़ा 'गोवा हिंदू एसो. कला विभाग' और 'नाट्य संपदा कला मंच' द्वारा उठाया गया है। इसके लिए कुछ वैसी ही भाषा का इस्तेमाल किया गया है जो युवाओं को आसानी से समझ आती है। तकनीकी माध्यम से संगीत मत्स्यगंधा के मूल कथा और स्वरूप में तब्दीली किए बिना उसे अपडेट करके नए कलेवर में पेश करने के दुरूह काम को निर्देशक ने खूबसूरती से अंजाम दिया है। इसके लिए उन्होंने चार घंटे के नाटक को दो घंटे का कर दिया है।